भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 10-07-2026

<u>बिहार में अल नीनो शमन के लिए कृषि परामर्श</u>

बिहार में चल रही कमजोर मानसून स्थिति और लगातार बनी गर्म और उमस भरी परिस्थितियों के कारण धान की नर्सरी (बिचड़ा) तैयार करने और उसके बाद उसकी रोपाई में देरी हुई है। इसके अलावा, भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), पटना केंद्र ने जुलाई महीने के दौरान भी बिहार के अधिकांश क्षेत्रों में सामान्य से कम बारिश और सामान्य से अधिक तापमान का पूर्वानुमान जताया है, जो शुरुआती मौसम में सूखे के जोखिम का संकेत देता है। इन जलवायु जोखिमों को कम करने के लिए, राज्य के किसानों को निम्नलिखित उपायों को अपनाने की सख्त सलाह दी जाती है:

फसल प्रबंधन:

- धान की कम अवधि और सूखा-सहनशील किस्में जैसे कि स्वर्ण श्रेया, सहभागी धान, डीआरआर धान-42, डीआरआर धान-44, नवीन, ललित स्वर्ण उन्नत, प्रभात, तुरंता, सहभागी, राजेंद्र श्वेता, डीआरआर 46, एराइज 6129 और एराइज 6444 इस स्थिति के लिए उपयुक्त हैं।
- ऊपरी भूमि या पानी की कमी वाले क्षेत्रों में, अरहर (जैसे कि मालवीय 13, आईपीए 203, पूसा 992, यूपीएएस 120, राजेंद्र अरहर-1, बहार) जैसी वैकल्पिक फसलों को अपनाएं और बीज की दर में 15-20% की वृद्धि करें। मेड़-नाली विधि से बुआई करें और नमी संरक्षण तकनीकों का पालन करें। किसान खेत की मेड़ों पर भी अरहर की खेती कर सकते हैं।
- इसके अलावा किसान अन्य वैकल्पिक फसलों जैसे कि मक्का (डीकेसी 9081 और सूखा-सहनशील हाइब्रिड- डीएचएम-117, एचक्यूपीएम-1, एचक्यूपीएम-5, शक्तिमान-1, शक्तिमान-4), रागी (वीएलएम 379, आरएयू 8, बांकुला) आदि भी लगा सकते हैं।
- जिन क्षेत्रों में सुनिश्चित वर्षा या सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, वहाँ धान की सीधी बुआई विधि अपनाएं। मानक बीज दर में 15-20% की वृद्धि करें।
- धान के लिए, समय और पानी बचाने के लिए मैट-टाइप या डैपोग नर्सरी तैयार करें। पानी की उपलब्धता के आधार पर क्रमबद्ध रोपाई की सुविधा के लिए सामुदायिक नर्सरी स्थापित करें।
- बेहतर अंकुरण और फसल के एकसमान विकास को सुनिश्चित करने के लिए बीजों को रात भर पानी में भिगो दें एवं बुआई से पहले बीजों को कवकनाशी और जैव उर्वरक के मिश्रण से उपचारित करें।
- रोपाई से पहले, पूरे खेत में पानी का एकसमान वितरण सुनिश्चित करने के लिए खेत की तैयारी में लेजर लैंड लेवलर तकनीक का उपयोग करें।
- खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गिला और सूखा' (Alternate Wetting and Drying - AWD) सिंचाई पद्धति अपनाएं। खेत की सिंचाई केवल तभी करें जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें, या जब पानी का स्तर मिट्टी की सतह से 15 सेमी नीचे चला जाए।

- खेतों की मेड़ों को तुरंत बनाएं और मरम्मत करें ताकि पानी का रिसाव न हो। वर्षा जल संचयन और उसे खेत में रोके रखने की क्षमता बढ़ाने के लिए मेड़ों की ऊँचाई बढ़ा दें।
- उर्वरक प्रबंधन (नाइट्रोजन का प्रयोग): फसल बोते समय एक ही बार में भारी मात्रा में नाइट्रोजन (यूरिया) देने के बजाय, इसे 3-4 बार में थोड़ा-थोड़ा करके दें। पोषक तत्वों के रिसाव और गैस बनकर उड़ने के नुकसान को कम करने के लिए नीम-लेपित यूरिया का उपयोग करें एवं सूखने पर अनुशंसित मात्रा का केवल 75% ही उपयोग करें। ।
- बुआई/रोपाई के कुछ दिनों के भीतर ही अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी जैसे पेंडिमेथालिन 1.25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर या प्रेटिलाक्लोर 0.75 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।

पशुधन प्रबंधन:

- पशुओं के लिए हर समय ताजे और साफ पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें। पानी को ठंडा रखने के लिए पानी की हौदियों या टंकियों को छायादार स्थानों पर रखें।
- पशुओं को प्राकृतिक या कृत्रिम छाया के नीचे रखें। जहाँ पेड़ उपलब्ध न हों, वहाँ धान के पुआल से बनी फूस की छतों का उपयोग करें।
- पशुओं के बाड़ों में हवा का उचित प्रवाह बनाए रखें। गर्म हवाओं के संपर्क में आने वाले किनारों पर गीली बोरी या गनी बैग लटकाएं ताकि आने वाली हवा ठंडी हो सके और बाड़े का तापमान कम हो सके।